हिन्दी दिवस के उद्‌गार

अभिकल्पना हिन्दी उत्थान

- श्री अशोक कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक - ब

स्व देश, स्व-धर्म, स्व-भाषा ही है, हम सबकी पहचान ।
आज देश नत-मस्तक है, हम करते हैं 'हिन्दी' सम्मान ।
राष्ट्र मुकुट, राष्ट्र भी भाषा, 'हिन्दी' है जन-जन की शान ।
गौरव गरिमा की मूर्ति बनी, अभिकल्पना 'हिन्दी' उत्थान ।।

क्या भूल गये अपनी ही वाणी ? क्या भूल गये अपनी पहचान ?
क्या भूल गये अमर-शहीदों को? वचन धर्म और अरमान ?
शहादत, देशाटन, मनोरंजन की वाणी, और है सबकी शान ।
गौरव गरिमा की मूर्ति बनी, अभिकल्पना 'हिन्दी' उत्थान ।।

स्वतंत्रता की बलि-वेदी है, जिसके निमित्त काया कुर्बान,
जन-जन की भाषा वाणी है, देती हम-सबको सम्मान ।
वचन लिपि सब एक हैं, एकरूपता है इसकी पहचान,
गौरव गरिमा की मूर्ति बनी, अभिकल्पना 'हिन्दी' उत्थान ।।

उदघोष कर रही मंच-मंच से वाणी-वाणी से जयकार,
जय हो भाषा, जय हो भाष्य, जयति जगत संगीत बहार ।
संस्कृति सभ्यता की धरोहर, राष्ट्र-भक्ति है इसकी पहचान ।
गौरव गरिमा की मूर्ति बनी, अभिकल्पना 'हिन्दी' उत्थान ।।

'हिन्दी' है राष्ट्र की भाषा, और जन-जन का संपर्क सूत्र,
'हिन्दी' है ' राज की भाषा', हम करते हैं इसका सम्मान ।
आयें ! व्रत ले इस पावन दिन, और करें, 'हिन्दी' में काम,
गौरव गरिमा की मूर्ति बनी, अभिकल्पना 'हिन्दी' उत्थान ।।

*****

हिंदी देश की एकता की कड़ी है ।

* डॉ० जाकिर हुसैन*